समावेशन की शुरुआत - कक्षा में बैठने की व्यवस्था

नीलम शिन्दे

जब मैंने पहली बार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ काम करना शुरू किया तो मैं बहुत उत्साहित थी और अपने विषय से बहुत प्रेम करती थी। एक व्यावसायिक चिकित्सक के रूप में मुझे कक्षा में बच्चों का अवलोकन करना होता था और इसके अलावा जब वे अन्य पाठ्येतर क्रियाएँ जैसे खेल, कला तथा स्वयं की देखभाल करते थे, तब भी उनकी ओर ध्यान देना होता था। इसके बावजूद मुझे यह नहीं मालूम था कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कक्षा का प्रबन्धन कैसे करना चाहिए। मैं कक्षा में यह सोचकर गई कि अगर पाठ योजना अच्छी है तो सब कुछ अच्छी तरह से हो जाएगा। लेकिन फिर मुझे पता चला कि ऐसा नहीं था।

विशेष स्कूल में आपको विद्यार्थियों का एक विषम समूह मिल सकता है जिसमें छह से आठ बच्चे विशेष आवश्यकता वाले हों। हाँ, अगर स्कूल में प्रशिक्षण और विकलांगता के विशिष्ट वर्ग को सहायता देने की व्यवस्था है तो बात और है। यदि कक्षा में दो विद्यार्थियों को थोड़ी बहुत मदद चाहिए, दो को ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार (attention deficit hyperactivity disorder) या ADHD की समस्या है, तीन शारीरिक रूप से अक्षम हैं और एक या दो में स्वलीनता के लक्षण हैं तो ऐसी परिस्थिति में आप समझ सकते हैं कि बिना सहायता के आप क्या, कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं कर पाएगा।

तब मुझे एहसास हुआ कि ऐसे में कक्षा प्रबन्धन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और वांछित होता है। यह ठीक है कि अपने विषय का ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है लेकिन कक्षा प्रबन्धन के बिना आप उन सब अद्भुत बातों को पढ़ाने में सक्षम नहीं हो सकते। सौभाग्य से, आप यह देख पाएँगे कि कक्षा की कार्यविधि में पाठ्यचर्या, अनुशासन और पाठ योजना जैसी बड़ी रणनीतियों से ही नहीं वरन इन छोटी-छोटी बातों से भी सुधार होता है।

जिन शिक्षकों को समावेशन का कोई अनुभव नहीं होता उनके लिए शिक्षा प्रणाली के बदलते परिदृश्य के साथ-साथ एक सामान्य कक्षा में विभिन्न आवश्यकता वाले बच्चों को समावेशित करना एक बड़ी चिन्ता का विषय होता है। व्यक्तिगत रूप से मुझे 'समावेशन' शब्द बहुत कल्पनापूर्ण लगता है जो पाश्चात्य विचारों से प्राप्त हुआ है। इसका मतलब नियमित कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को बिठा देना मात्र नहीं है। यह बात है दृष्टिकोण की, केवल किसी कार्यक्रम की नहीं।

आइए, हम बैठने की व्यवस्था जैसे कुछ 'छोटे-छोटे' बदलावों पर नज़र डालें जो स्थिति में काफी अन्तर ला सकते हैं और यह देखें कि ये बदलाव विद्यार्थियों के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं।

जब हम पारम्परिक कक्षा के बारे सोचते हैं तो हमारे सामने एक ऐसा चित्र उभरता है जिसमें बच्चे अपनी कुर्सी-डेस्क पर बैठे हैं और शिक्षक उनके सामने किसी पाठ की अवधारणा समझा रहे हैं। हमने यह भी महसूस किया है कि पहली पंक्ति में बैठे हुए विद्यार्थी मेहनती माने जाते हैं। वे नहीं चाहते कि कोई भी महत्त्वपूर्ण चीज़ उनसे छूट जाए। कभी-कभी शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी लम्बाई के अनुसार बिठाते हैं ताकि वे आसानी से देख सकें या शैक्षिक सरोकारों के कारण वे कभी-कभी छोटे समूह भी पसन्द करते हैं जिससे विद्यार्थी-सहयोग को बढ़ावा मिले।

हो सकता है कि आपने बैठक व्यवस्था के कुछ नवीनतम तरीक़े भी देखे हों जहाँ बच्चों को सीखने और खोजबीन करने के लिए कक्षा में इधर-उधर जाने की अनुमति दी जाती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भी यह असामान्य बात नहीं है। आपको आश्चर्य हो सकता है अगर मैं कहूँ कि डेस्क आदि के स्थान पर मेज़ या दरियों का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन मैं ऐसा नहीं करूँगी। जब किसी बच्चे को दूसरों के पास बैठकर काम करने में कोई समस्या हो तो डेस्क भी ठीक रहती हैं।

कक्षा में बैठने की व्यवस्था बहुत महत्त्वपूर्ण है, ख़ासकर अगर आपके पास एक ऐसा विद्यार्थी है जिसे व्यवहार सम्बन्धी समस्या है या किसी को शारीरिक/दृष्टि सम्बन्धी कोई परेशानी है। ऐसी परिस्थिति में रचनात्मक रूप से सोचना पड़ता है। एक शिक्षक के रूप में आपको विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए विशिष्ट प्रयत्न करने होंगे, क्योंकि उन्हें सामान्य क्रियाओं को करने/समझने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ते हैं और उनका आत्मसम्मान काफ़ी हद तक कक्षा की व्यवस्था से प्रभावित होता है।

हो सकता है कि आप इस तरीक़े से परिचित हों और शायद पहले से ही ऐसा कुछ कर भी रहे हों; जैसे बैठने की पंक्तिबद्ध व्यवस्था, गोलाकार और अर्ध-गोलाकार व्यवस्था, मुक्त व्यवस्था आदि। हर व्यवस्था में अच्छाइयाँ और कमियाँ दोनों हैं। बैठने की व्यवस्था का विद्यार्थी-प्रदर्शन में बहुत बड़ा योगदान होता है। शिक्षक सोच-विचार करके विशेष

परिस्थिति, कक्षा और सभी विद्यार्थियों को दृश्यता प्रदान करने के अनुरूप बैठने की व्यवस्था और उसकी अवधि का चयन कर सकते हैं। कोई एक व्यवस्था हर स्थिति में ठीक नहीं बैठ सकती क्योंकि आपकी आवश्यकताएँ और शिक्षण उद्देश्य भिन्न हैं। अगर आप कक्षा में यह घोषणा करते हैं कि इस प्रकार की विशेष व्यवस्था इसलिए की जा रही है क्योंकि कक्षा में कोई एक विद्यार्थी अक्षम है तो आप उसे कक्षा से विलग कर रहे हैं। मेरी सलाह यह है कि इसे कक्षा की एक सामान्य नीति के रूप में लिया जाए।

कुछ उचित समाधान बताते हैं कि किस तरह कक्षा का वातावरण बदलकर कक्षा के क्रियाकलापों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की भागीदारी बढ़ाई जा सकती है और उसे एक सफल शिक्षार्थी बनाया जा सकता है।

जो बच्चा व्हीलचेयर का प्रयोग करता है उसके लिए मुक्त पंक्ति वाली व्यवस्था ठीक रहेगी। कुछ बच्चों को कम ऊँचाई वाली कुर्सी, मज़बूत डेस्क और लिखने के लिए ढलवाँ बोर्ड जैसे फर्नीचर की ज़रूरत होगी। इसी प्रकार स्वलीन विद्यार्थी के लिए एक संरचित कार्यक्रम उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना किसी कोर्स के लिए पाठ्यक्रम। कम अवधि तक ध्यान केन्द्रित करने वाले किसी विद्यार्थी को आप खिड़की या दरवाज़े के पास बिठाना पसन्द नहीं करेंगे क्योंकि वहाँ उसका ध्यान बँटने के पर्याप्त अवसर होंगे।

जो बच्चे ठीक से सुन नहीं सकते वे होंठों की गति देखकर बातें समझने का प्रयास करते हैं। उन्हें आगे की तीन पंक्तियों में बिठाना ठीक होगा और पढ़ाते समय आप अपने बोलने की गति न तो बदलें और न ही उनकी ओर पीठ करके बोलें। आपको बीच-बीच में अपनी बात दोहरानी भी पड़ सकती है अतः अपना धीरज बनाए रखें। कक्षा में भरपूर रोशनी होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी शिक्षक के होंठों की गति स्पष्ट रूप से देख सकें और उनकी बातें समझ सकें। लेकिन स्वलीन विद्यार्थियों के सन्दर्भ में रोशनी की तीव्रता में समायोजन करने से उन्हें बहुत लाभ होगा।

दूसरे, सुनने में दिक़्क़त महसूस करने वाले बच्चों के लिए गतिशील कुर्सी की व्यवस्था हो सके तो उन्हें आसानी होगी क्योंकि बोलने वाले से उनकी दूरी का प्रभाव उनके समझने पर पड़ता है। कक्षा के क्रियाकलापों या स्कूल के समारोहों के दौरान अगर ये बच्चे संकेत भाषा इंटरप्रेटर का प्रयोग कर रहे हों तो इंटरप्रेटर के सामने न चलें जैसा कि हम अनजाने में अक्सर करते हैं। आपने देखा होगा कि कुछ बच्चे श्रवण यंत्र (हीरिंग एड) का प्रयोग करते हैं। इसलिए उनके आसपास होने वाले शोर-शराबे पर नियंत्रण रखना ज़रूरी है। अगर बाक़ी के बच्चे बातें करते रहेंगे या फुसफुसाएँगे तो इन बच्चों को सुनने में कठिनाई होगी।

दृष्टिबाधित बच्चों के साथ काम करते वक़्त इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा की भौतिक व्यवस्था को बार-बार न बदला जाए। अगर कोई बदलाव करें भी तो उन्हें उसके बारे में पहले ही सचेत कर देना चाहिए। यही बात स्वलीन बच्चों पर भी लागू होती है जिन्हें बार-बार होने वाले परिवर्तन अच्छे नहीं लगते।

ये बच्चे बेहद उद्विग्न रहते हैं और हो सकता है कि वे अपनी भावनाओं को व्यक्त न करना चाहते हों। इसलिए फर्नीचर और बैठने की व्यवस्था को जरा बदल देने से उन्हें न केवल इधर-उधर जाने की स्वतंत्रता मिल जाती है बल्कि वे स्वेच्छा से कक्षा के क्रियाकलापों में भाग भी ले सकते हैं। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी होती हैं जब क्रियाकलाप के दौरान फर्नीचर से ज़्यादा बच्चे के पास बैठा हुआ उसका मित्र या उसके शिक्षक महत्त्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं।

समावेशी प्रणाली में शिक्षकों को विभिन्न व्यक्तित्व और सीखने की क्षमता वाले विद्यार्थियों की ज़रूरतों को पूरा करना होता है। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के साथ स्कूल छोड़ने और मनोवैज्ञानिक आघात से ग्रस्त होने का ख़तरा अधिक होता है। मुझे लगता है कि पाठ योजना के अलावा कुछ मूलभूत बातों पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है जैसे बच्चे की दिनचर्या को समझना, बैठने की ऐसी व्यवस्था करना जिससे कक्षा पर बेहतर नियंत्रण किया जा सके और साथ ही शैक्षिक सफलता हासिल करने में इन बच्चों की मदद करना। इसलिए शिक्षकों के लिए यह ज़रूरी है कि उन्हें बैठने की व्यवस्था का ज्ञान हो ताकि विविध शारीरिक और बौद्धिक विशेषताओं वाले बच्चों को समावेशी वातावरण में पढ़ाया जा सके।

"सभी के लिए शिक्षा" और शिक्षा का अधिकार अधिनियम सम्बन्धी आन्दोलन को सभी क्षेत्रों से मान्यता मिल रही है। यह समावेशी शिक्षा के अन्तराल को दूर करने और शिक्षकों को सभी विद्यार्थियों के अनुरूप शिक्षण विधियों से लैस करने का रास्ता हो सकता है। यदि आप मूल शैक्षिक अभ्यासों की अधिकाधिक पूर्व योजना बनाएँगे तो आप आकस्मिक स्थितियों का सामना भी आसानी से कर पाएँगे जो कि अक्सर सामने आती ही रहती हैं।

नीलम शिन्दे को भारत और प्रशान्त क्षेत्र में विकलांग वयस्कों और बच्चों के कार्यक्रमों/परियोजनाओं के प्रबन्धन का पेशेवर अनुभव है। वे विशेष और समावेशी स्थिति में विशेष आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों का प्रबन्धन करने के लिए पाठ्यक्रम डिज़ाइन करने के साथ-साथ विशेष शिक्षक भी तैयार करती हैं। वे आजीविका हेतु गतिविधियाँ और ऐसी अनुकूलनीय रणनीतियाँ तैयार करती हैं जिससे अक्षम बच्चे और वयस्क घर, स्कूल तथा कार्य क्षेत्र में उत्तम और स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें। उनसे nilshind@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल